शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण : बिनोद बिहारी महतो जी का दृष्टिकोण

[1] डॉ लम्बोदर महतो

सार (Abstract)

झारखंड आंदोलन के प्रमुख शिल्पकार बिनोद बिहारी महतो जी ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक चेतना और आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार माना। उनका मानना था कि किसी भी समाज का वास्तविक विकास तब तक संभव नहीं है जब तक समाज का वंचित, पिछड़ा, आदिवासी, मूलवासी तथा श्रमिक वर्ग शिक्षा के माध्यम से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक न हो जाए। उनका प्रसिद्ध नारा "पढ़ो और लड़ो" सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान और लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए संघर्ष का घोष था।

यह शोध-पत्र बिनोद बिहारी महतो के शैक्षिक चिंतन, सामाजिक सशक्तिकरण की अवधारणा तथा झारखंड आंदोलन में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों–पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी दस्तावेजों तथा अभिलेखीय सामग्री–के आधार पर उनके विचारों का मूल्यांकन किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बिनोद बिहारी महतो शिक्षा को सामाजिक समानता, लोकतांत्रिक भागीदारी, आर्थिक उन्नति तथा सांस्कृतिक आत्मगौरव का प्रमुख साधन मानते थे। उनके विचार आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020), समावेशी शिक्षा, सामाजिक न्याय तथा सतत विकास के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द: शिक्षा, सामाजिक सशक्तिकरण, बिनोद बिहारी महतो, झारखंड आंदोलन, सामाजिक न्याय, पिछड़ा वर्ग, आदिवासी, मूलवासी।

Corresponding author

[1] रांची यूनिवर्सिटी ,रांची

1. भूमिका (Introduction)

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास का सबसे प्रभावी साधन मानी जाती है। यह केवल साक्षरता तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति में आत्मविश्वास, आलोचनात्मक चिंतन, लोकतांत्रिक चेतना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में शिक्षा सामाजिक असमानताओं को कम करने तथा वंचित समुदायों को मुख्यधारा से जोड़ने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम रही है।

झारखंड के सामाजिक एवं राजनीतिक इतिहास में बिनोद बिहारी महतो का योगदान इसी संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने यह अनुभव किया कि झारखंड की मूल समस्या केवल आर्थिक पिछड़ापन नहीं, बल्कि शिक्षा का अभाव, सामाजिक विभाजन तथा राजनीतिक जागरूकता की कमी भी है। इसलिए उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का आधार बनाया और सामाजिक न्याय के संघर्ष को शैक्षिक जागरण से जोड़ा।

उनका मानना था कि अशिक्षित समाज अपने संवैधानिक अधिकारों का उपयोग प्रभावी ढंग से नहीं कर सकता। इसलिए उन्होंने विशेष रूप से युवाओं, पिछड़े वर्गों, आदिवासियों, मूलवासियों तथा श्रमिक समुदाय के बीच शिक्षा के प्रसार पर बल दिया। उनका प्रसिद्ध नारा **"पढ़ो और लड़ो"** वास्तव में ज्ञान, संगठन और अधिकारों के लिए लोकतांत्रिक संघर्ष का संदेश था।

आज जब भारत समावेशी शिक्षा, सामाजिक न्याय, कौशल विकास तथा सतत विकास जैसे विषयों पर विशेष बल दे रहा है, तब बिनोद बिहारी महतो का शैक्षिक चिंतन पुनः प्रासंगिक हो गया है। उनके विचार केवल झारखंड तक सीमित नहीं हैं, बल्कि भारत के सामाजिक विकास मॉडल के लिए भी प्रेरणास्रोत हैं।

2. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. बिनोद बिहारी महतो के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
2. शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण के संबंध का विश्लेषण करना।
3. झारखंड आंदोलन में शिक्षा की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. पिछड़े एवं वंचित वर्गों के उत्थान हेतु उनके विचारों का विश्लेषण करना।
5. वर्तमान शिक्षा नीति एवं सामाजिक न्याय के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

3. शोध प्रश्न (Research Questions)

1. बिनोद बिहारी महतो शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम क्यों मानते थे?

2. उनका "पढ़ो और लड़ो" का सिद्धांत सामाजिक सशक्तिकरण में किस प्रकार सहायक था?
3. झारखंड आंदोलन में शिक्षा की क्या भूमिका रही?
4. वर्तमान समय में उनके शैक्षिक विचार कितने प्रासंगिक हैं?

4. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative Research) तथा ऐतिहासिक-वर्णनात्मक (Historical-Descriptive) शोध पद्धति पर आधारित है।

अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें शोध-पत्र, पुस्तकें, सरकारी प्रकाशन, समाचार-पत्र, विश्वविद्यालयीय शोध प्रबंध तथा झारखंड आंदोलन से संबंधित ऐतिहासिक दस्तावेज सम्मिलित हैं। उपलब्ध स्रोतों का विषय-वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) एवं तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Analysis) कर बिनोद बिहारी महतो के शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन किया गया है।

5. बिनोद बिहारी महतो का शैक्षिक दर्शन एवं शिक्षा के माध्यम से सामाजिक सशक्तिकरण

5.1 शिक्षा : सामाजिक परिवर्तन का आधार

बिनोद बिहारी महतो का विश्वास था कि किसी भी समाज का स्थायी विकास केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए शिक्षा के माध्यम से सामाजिक चेतना का विकास आवश्यक है। उनका मानना था कि अशिक्षा व्यक्ति को आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से निर्भर बनाती है, जबकि शिक्षा उसे आत्मनिर्भर, जागरूक तथा लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति सचेत नागरिक बनाती है। इसी विचार के कारण उन्होंने झारखंड के ग्रामीण, आदिवासी, मूलवासी तथा पिछड़े समुदायों में शिक्षा के प्रसार को अपना प्रमुख सामाजिक लक्ष्य बनाया।

बिनोद बिहारी महतो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में सामाजिक उत्तरदायित्व, आत्मसम्मान तथा नेतृत्व क्षमता का विकास करना है। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते हुए युवाओं से आह्वान किया कि वे शिक्षा प्राप्त कर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान में सक्रिय भूमिका निभाएँ। यह दृष्टिकोण आधुनिक मानव पूंजी सिद्धांत (Human Capital

Theory) के साथ-साथ पाउलो फ्रेरे (Paulo Freire) के *Critical Pedagogy* के विचारों से भी सामंजस्य स्थापित करता है, जिसमें शिक्षा को सामाजिक मुक्ति का माध्यम माना गया है।

5.2 "पढ़ो और लड़ो" : शिक्षा का लोकतांत्रिक दर्शन

बिनोद बिहारी महतो का प्रसिद्ध नारा **"पढ़ो और लड़ो"** झारखंड आंदोलन की वैचारिक पहचान बन गया। इस नारे का उद्देश्य हिंसात्मक संघर्ष नहीं था, बल्कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक अन्याय, आर्थिक शोषण तथा राजनीतिक उपेक्षा के विरुद्ध संवैधानिक एवं लोकतांत्रिक संघर्ष के लिए समाज को तैयार करना था। उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार उन्होंने शिक्षा को अधिकारों की रक्षा, सामाजिक समानता तथा राजनीतिक सहभागिता का मूल आधार माना।

यह नारा विशेष रूप से युवाओं को संबोधित था। उनका मानना था कि यदि युवा शिक्षित होंगे तो वे सामाजिक कुरीतियों, जातिगत भेदभाव, आर्थिक शोषण तथा प्रशासनिक उपेक्षा के विरुद्ध लोकतांत्रिक तरीके से आवाज उठा सकेंगे। इस प्रकार शिक्षा उनके लिए केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का माध्यम थी।

5.3 सामाजिक सशक्तिकरण की अवधारणा

बिनोद बिहारी महतो के सामाजिक चिंतन का मूल आधार **समावेशी सशक्तिकरण (Inclusive Empowerment)** था। उनका विश्वास था कि झारखंड के विकास के लिए आदिवासी, मूलवासी, पिछड़े वर्ग, किसान, श्रमिक तथा अन्य वंचित समुदायों को समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। उन्होंने सामाजिक न्याय को केवल संवैधानिक प्रावधान न मानकर सामाजिक व्यवहार का हिस्सा बनाने पर बल दिया।

उनके अनुसार सामाजिक सशक्तिकरण के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं–

1. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की सार्वभौमिक उपलब्धता।
2. सामाजिक समानता एवं जातिगत भेदभाव का उन्मूलन।
3. आर्थिक आत्मनिर्भरता।
4. लोकतांत्रिक निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता।
5. सांस्कृतिक अस्मिता एवं स्थानीय भाषाओं का संरक्षण।

यह दृष्टिकोण आज संयुक्त राष्ट्र के **सतत विकास लक्ष्य (SDGs)** विशेषकर **SDG-4 (Quality Education)** तथा **SDG-10 (Reduced Inequalities)** के उद्देश्यों के साथ भी सामंजस्य रखता है।

5.4 शिक्षा और झारखंड आंदोलन

झारखंड आंदोलन को प्रारंभिक चरण में मुख्यतः क्षेत्रीय एवं राजनीतिक आंदोलन माना जाता था, किंतु बिनोद बिहारी महतो ने इसे सामाजिक एवं शैक्षिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि पृथक राज्य का उद्देश्य केवल प्रशासनिक पुनर्गठन नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सामाजिक न्याय की स्थापना भी होना चाहिए।

उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार, स्थानीय भाषाओं एवं संस्कृति के संरक्षण तथा युवाओं में नेतृत्व विकास पर विशेष बल दिया। उपलब्ध स्रोतों से यह भी स्पष्ट होता है कि उन्होंने अनेक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की स्थापना में आर्थिक एवं सामाजिक सहयोग दिया तथा शिक्षा के प्रसार को जनआंदोलन का हिस्सा बनाया।

5.5 समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता

आज जब भारत **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** के माध्यम से समावेशी शिक्षा, बहुभाषिकता, कौशल विकास एवं समान अवसर पर बल दे रहा है, तब बिनोद बिहारी महतो के विचार और अधिक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका शिक्षा मॉडल स्थानीय आवश्यकताओं, सामाजिक न्याय एवं सामुदायिक सहभागिता पर आधारित था, जो वर्तमान शिक्षा सुधारों के अनेक सिद्धांतों से मेल खाता है।

झारखंड सहित अन्य राज्यों में आदिवासी एवं वंचित समुदायों की शैक्षिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए उनके विचार नीति-निर्माण में उपयोगी हो सकते हैं। विशेष रूप से स्थानीय भाषा में शिक्षा, सामुदायिक नेतृत्व, युवाओं का कौशल विकास तथा सामाजिक उत्तरदायित्व आधारित शिक्षा उनके चिंतन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

निष्कर्ष

बिनोद बिहारी महतो का शैक्षिक एवं सामाजिक चिंतन झारखंड के सामाजिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण वैचारिक धरोहर के रूप में स्थापित होता है। उन्होंने शिक्षा को केवल साक्षरता या रोजगार प्राप्ति का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे सामाजिक चेतना, आत्मसम्मान, लोकतांत्रिक

भागीदारी तथा सामाजिक न्याय की आधारशिला के रूप में देखा। उनका विश्वास था कि जब तक समाज का वंचित, आदिवासी, मूलवासी, पिछड़ा एवं श्रमिक वर्ग शिक्षित और जागरूक नहीं होगा, तब तक वास्तविक सामाजिक परिवर्तन और समतामूलक विकास संभव नहीं है (Kumar, 2024)।

बिनोद बिहारी महतो का प्रसिद्ध नारा "पढ़ो और लड़ो" उनके शैक्षिक दर्शन का सार प्रस्तुत करता है। इसका अभिप्राय शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को अपने संवैधानिक अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक बनाना था। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को केवल ज्ञान ही नहीं देती, बल्कि उसे अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक ढंग से संघर्ष करने की क्षमता भी प्रदान करती है। इस प्रकार उनका शिक्षा-दर्शन आधुनिक सामाजिक सशक्तिकरण की अवधारणा से पूर्णतः मेल खाता है (Freire, 1970)।

झारखंड आंदोलन के संदर्भ में बिनोद बिहारी महतो ने शिक्षा को सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के साथ जोड़ा। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि पृथक राज्य की स्थापना का उद्देश्य केवल प्रशासनिक पुनर्गठन नहीं, बल्कि शिक्षा, सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक अस्मिता तथा आर्थिक समानता पर आधारित समावेशी विकास होना चाहिए। उनके नेतृत्व में झारखंड आंदोलन ने सामाजिक समावेशन, पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधित्व तथा युवाओं की सक्रिय भागीदारी को नई दिशा प्रदान की (Rekhi, 1988; Sengupta, 1982)।

वर्तमान समय में जब भारत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से समावेशी शिक्षा, कौशल विकास, बहुभाषिकता, समान अवसर एवं स्थानीय ज्ञान पर बल दे रहा है, तब बिनोद बिहारी महतो के विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन, स्थानीय नेतृत्व विकास तथा सामुदायिक सहभागिता से जोड़ने का उनका दृष्टिकोण आज भी नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों और समाजशास्त्रियों के लिए प्रेरणास्रोत है (Government of India, 2020)।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि बिनोद बिहारी महतो के शैक्षिक चिंतन पर स्वतंत्र एवं गहन अकादमिक शोध अपेक्षाकृत कम उपलब्ध हैं। अधिकांश अध्ययन उनके राजनीतिक योगदान या झारखंड आंदोलन तक सीमित हैं, जबकि शिक्षा, सामाजिक सशक्तिकरण, नेतृत्व विकास तथा सामुदायिक संगठन के संदर्भ में उनके विचारों का व्यापक विश्लेषण अभी शेष है। भविष्य में उनके भाषणों, पत्राचार, समकालीन समाचार-पत्रों, अभिलेखीय दस्तावेजों तथा मौखिक इतिहास (Oral History) के आधार पर अधिक गहन एवं प्राथमिक स्रोत-आधारित शोध किए जाने की आवश्यकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बिनोद बिहारी महतो केवल झारखंड आंदोलन के एक राजनीतिक नेता नहीं थे, बल्कि वे शिक्षा-आधारित सामाजिक परिवर्तन के समर्थक, लोकतांत्रिक मूल्यों के संवाहक और सामाजिक न्याय के प्रखर चिंतक थे। उनका शैक्षिक दर्शन आज भी समतामूलक समाज, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सामाजिक समावेशन और जनसशक्तिकरण की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। अतः उनके विचारों का पुनर्पाठ और पुनर्मूल्यांकन न केवल झारखंड बल्कि सम्पूर्ण भारतीय समाज के समावेशी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1. Kumar, P. (2024). *Role of Binod Bihari Mahto in Unifying Masses for Separate Jharkhand Movement*. *International Journal of Political Science and Governance*, 6(1), 95–97. https://doi.org/10.33545/26646021.2024.v6.i1b.310.
2. Sengupta, N. (Ed.). (1982). *Fourth World Dynamics: Jharkhand*. Authors Guild, New Delhi.
3. Rekhi, U. S. (1988). *Jharkhand Movement in Bihar*. New Delhi: Nunes Publishers.
4. Dutt, B. *Jharkhand Andolan Ki Kahani*. Crown Publications.
5. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.